प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

परिशुद्ध खेती से आयेगी अगली हरित क्रांतिः डा. बी.एस. बिष्ट

पंतनगर। ०४ मार्च, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा पहली हरित क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया तथा अब अगली हरित क्रांति में भी पंतनगर की बड़ी भूमिका होगी। यह बात आज पंतनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं वर्तमान में बिरला इंस्टीयूट ऑफ एप्लाइड साइंसेस, भीमताल के निदेशक, डा. बी.एस. बिष्ट ने पंतनगर विश्वविद्यालय के १०१वें अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का गांधी हॉल में मुख्य अतिथि के रूप में शुभारम्भ करते हुए कही। उन्होंने कहा कि परिशुद्ध खेती, जिसे स्मार्ट खेती या परिष्कृत खेती के नाम से भी जाना जाता है, को प्रत्येक किसान तक पहुचाने की आवश्यकता है, ताकि कम से कम संसाधनों के प्रयोग द्वारा अधिक से अधिक उत्पादन लिया जा सके तथा पर्वतीय कृषि को भी लाभकारी बनाकर किसानों को इससे जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। डा. बिष्ट ने नानो तकनीक, पॉलीहाऊस तकनीक, बायो तकनीक, आदि आधुनिक तकनीकों को परिशुद्ध खेती के साथ समन्वित करने की बात कही। मुख्य अतिथि ने वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नयी-नयी तकनीकें एवं नई प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त बीज पर्वतीय क्षेत्र के किसानों तक पहुचाने को भी अत्यंत आवश्यक बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के प्रवेश की क्षमता बढ़ाये जाने, इन्टरनेशनल स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर को पुनः प्रारम्भ किये जाने एवं खाद्य प्रसंस्करण पर अधिक ध्यान दिये जाने के लिए भी कहा एवं आशा प्रकट की कि पंतनगर के वैज्ञानिक, बीज एवं विद्यार्थी पूरे देश एवं विदेशों में अपना परचम लहराते रहेंगे।

इससे पूर्व डा. बी.एस. बिष्ट ने गांधी मैदान में लगे किसान मेले का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार; निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास; के अतिरिक्त अन्य गणमान्य अतिथि एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। कुलपति, डा. जे. कुमार, द्वारा डा. बिष्ट को मेले में लगे इन्नोवेशन स्टाल, पर्वतीय कृषि पर लगाये गये विशेष स्टाल एवं उद्यान प्रदर्शनी के स्टालों का भ्रमण कराया गया, जिनमें प्रदर्शित की गयी विभिन्न तकनीकों एवं उत्पादों में डा. बिष्ट ने गहरी रूचि दिखाई। इसके बाद कुलपति ने मुख्य अतिथि को खुली जीप में बैठाकर मेला प्रांगण का भ्रमण कराया। मुख्य उद्घाटन समारोह गांधी हाल सभागार में आयोजित किया गया।

उद्घाटन समारोह कि अध्यक्षता कर रहे कुलपति, डा. जे. कुमार, ने कहा कि भारतीय कृषि ने अभूतपूर्व प्रगति की है तथा खाद्य उत्पादन वर्ष १९५०-५१ के ५० मिलियन टन से २०१६-१७ में बढ़कर लगभग २७१ मिलियन टन हो गया है। उन्होंने कहा कि देश में खाद्यान्न उत्पादन में ५ गुना, दुग्ध उत्पादन में ९ गुना, मत्स्य उत्पादन में ११ गुना एवं कुक्कुट उत्पादन में ३२ गुना वृद्धि हुयी है। साथ ही कृषि के कई क्षेत्रों में भारत विश्व में पहले अथवा दूसरे स्थान पर है, लेकिन उन्होंने कहा कि उत्पादकता के क्षेत्र में हम अभी काफी पीछे हैं। डा. जे. कुमार ने कुछ किसानों द्वारा विश्व स्तर से भी अधिक उत्पादकता लिये जाने का जिक्र करते हुए अन्य किसानों को उनसे सीख लेने को कहा, ताकि १.८ प्रतिशत की दर से बढ़ रही जनसंख्या के लिए वर्ष २०५० तक ३५० मिलियन टन खाद्यान्न के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। कुलपति ने अगली हरित क्रांति में छोटे व सीमांत किसानों की अधिक संख्या को देखते हुए उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया तथा उनके लिए नयी तकनीकें विकसित करने का वैज्ञानिकों से आह्वान किया। उन्होंने आशा प्रकट की कि अगली हरित क्रांति की जननी के रूप में भी पंतनगर विश्वविद्यालय पहचाना जायेगा।

डा. अजय सिंह एवं श्री जे.एस. संधु ने कृषि प्रधान देश एवं प्रदेश होने के कारण उत्तराखण्ड एवं पूरे देश के किसानों की निगाहें एवं उम्मीदे पंतनगर की ओर लगे रहने की बात कही तथा यहां से विकसित तकनीकों से लाभान्वित होकर किसानों की उन्नति होने के बारे में भी कहा। उन्होंने पंतनगर के वैज्ञानिकों से प्रदेश की विभिन्न जलवायु के क्षेत्रों के लिए तकनीकें विकसित करने की अपेक्षा की।

उद्घाटन सत्र के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. डबास ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया एवं मेले के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। मेले में उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों के साथ-साथ अन्य प्रदेशों तथा नेपाल के किसान भी बड़ी संख्या में आते हैं।

किसान मेले का फीता काटकर उद्घाटन करते पूर्व कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट; साथ में पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार; एवं अन्य अतिथिगण व वैज्ञानिक।

किसान मेले के उद्घाटन समारोह में किसानों व अन्य उपस्थितजनों को गांधी हाल में सम्बोधित करते डा. बी.एस. बिष्ट।